प्रश्न 1. प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। आपकी समझ में इसकी क्या वजह हो सकती है ?

उत्तर : पाठ में यह तो पता चलता है कि बच्चे का अपने पिता के साथ अधिक जुड़ाव था। वह पिता के साथ ही बाहर बैठक में सोया करता था। पिता ही उसे नहलाया-धुलाया करते थे तथा उसे तैयार करके अपने पास पूजा में बिठाते थे। उन्होंने उसका नाम 'भोलानाथ' प्यार में रखा था। इन सब बातों से बच्चे का पिता के प्रति जुड़ाव का पता चलता है।

विपदा के समय बच्चा पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। पाठ के अंतिम भाग में बताया गया है कि एक बार साँप के भय से बच्चा गिरता-पड़ता घर पहुँचा। उसकी सारी देह लहूलुहान हो चुकी थी। पैरों का तलवा काँटों से छलनी हो गया था। तब वह पिता के पास न जाकर माँ की गोद में समा गया था। उसने बच्चे की चोटों पर हल्दी पीसकर लगाई। बच्चा मैया के आँचल में छिपा जाता था। पिता ने उसे अपनी गोद में लेना चाहा, पर उसने माँ की गोद नहीं छोड़ी।

प्रश्न 2. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है ?

उत्तर : घर में माँ बच्चे के लाख छटपटाने पर भी उसे पकड़कर उसके सिर में चुल्लू भर कड़वा तेल डाल देती थी। वह सिर को तेल से सराबोर करके ही छोड़ती थी। फिर माथे पर

Scanned by TapScanner

काजल की बिंदी लगाती और फूलदार लट्टू बाँधकर कुरता-टोपी पहना देती। इस प्रकार माँ के हठ से तंग आकर बच्चे सिसकने लगते थे। तब वे बाबूजी की गोद में सिसकते बाहर आते। पर बाहर आते ही उनकी प्रतीक्षा करता बालकों का झुंड मिल जाता था। तब वह अपने खेल के साथियों को देखकर सिसकना भूल जाता था। हमारे विचार से वह खेलने का अवसर पाकर सिसकना भूल जाता था।

प्रश्न 3. आपने देखा होगा कि भोलानाथ और उसके साथी जब-तब खेलते-खाते समय किसी-न-किसी प्रकार तुकबंदी करते हैं। आपको यदि खेलों से जुड़ी तुकबंदी याद हो तो लिखिए।

उत्तर : खेलों से जुड़ी तुकबंदी

आओ बच्चो खेलें खेल।
खूब मचाएँ रेलम पेल।।
मैं खेलूँगा खेल कबड्डी।
तुम भी रहना नहीं फिसड्डी।
मेरा खेल है फुटबॉल।
तुम खेलते बॉलीबाल।।

प्रश्न 4. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है ? *(CBSE S.P. I, 2008)*

उत्तर : भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेल की सामग्री–

Scanned by TapScanner

माता की

दुकानों का खेल :

मिठाई की दुकान-लड्डू, पत्तों की पूरी-कचौरियाँ, गीली मिट्टी की जलेबियाँ

फूटे घड़े, दियासलाई की पेटियाँ

पानी के घी, धूल के पिसान, बालू की चीनी भोजन-सामग्री

बारात का खेल : कनस्तर का तंबूरा, आम के पौधे की शहनाई, चूहेदानी की पालकी खटोली की डोली।

अर्थात् भोलानाथ और उसके साथियों के खेल दैनिक जीवन की घटनाओं से जुड़े होते थे तथा उनकी खेल-सामग्री सामान्य चीजें हुआ करती थीं।

हमारे खेल और खेल की सामग्री

क्रिकेट : क्रिकेट के बैट-गेंद, विकेट।

फुटबॉल : नेट, बॉल

दोनों प्रकार की सामग्री में काफी भिन्नता है।

प्रश्न 5. इस पाठ में आए प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गए हों।

उत्तर : इस पाठ में ऐसे अनेक प्रसंग आए हैं जो हमारे दिल को छू गए हैं :

- जब बाबूजी रामायण का पाठ करते तब हम उनकी बगल में बैठे-बैठे आइने में अपना मुँह निहारा करते थे। जब वह हमारी ओर देखते तब हम कुछ लजाकर और मुसकराकर आइना नीचे रख देते थे। वे भी मुसकरा पड़ते थे।
- देखिए, मैं खिलाती हूँ। मरदुए क्या जानें कि बच्चों को कैसे खिलाना चाहिए, और महतारी के हाथ से खाने पर बच्चों का पेट भी भरता है।
- मइयाँ चावल अमनिया (साफ) कर रही थी। हम उसी के आँचल में छिप गए। हमें डर से काँपते देखकर वह जोर से रो पड़ी और सब काम छोड़ बैठी। अधीर होकर हमारे भय का कारण पूछने लगी। कभी हमें अंग भरकर दबाती और कभी हमारे अंगों को अपने आँचल से पोंछकर हमें चूम लेती। बड़े संकट में पड़ गई।
- इसी समय बाबूजी दौड़े आए। आकर झट हमें मइयाँ की गोद से अपनी गोद में लेने लगे। पर हमने मइयाँ के आँचल की- प्रेम और शांति के चँदोवे की छाया न छोड़ी----।

प्रश्न 6. इस उपन्यास के अंश में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं ?

उत्तर : तीस के दशक अर्थात् 1930 के आस-पास ग्राम्य संस्कृति में दिखावट-बनावट का अभाव था। तब का जीवन

Scanned by TapScanner

सीधा-सादा था। बच्चे घर की फालतू सामग्री से वे खेल खेलते थे तब चोट पर हल्दी वगैरह लगाकर इलाज कर लिया जाता था। स्कूल में गुरुजी का काफी दबदबा रहता था।

अब इक्कीसवीं शती के प्रारंभ में ग्रामीण संस्कृति में भी परिवर्तन आए हैं–

– अब यहाँ भी खेल के नए-नए सामान प्रयुक्त होने लगे हैं।

– बच्चों के पालन-पोषण के तरीकों में भी अंतर आया है।

– अब पूजा-पाठ के प्रति लोगों का रुझान घटा है।

– ओसारे में बैठकर हुक्का गुड़गड़ाना कम होता चला जा रहा है।

प्रश्न 7. पाठ पढ़ते-पढ़ते आपको भी अपने माता-पिता का लाड़-प्यार याद आ रहा होगा। अपनी इन भावनाओं को डायरी में अंकित कीजिए।

उत्तर : विद्यार्थी अपनी-अपनी भावनाओं को स्वयं डायरी में अंकित करें। प्रत्येक विद्यार्थी की भावनाओं में भिन्नता होती है।

प्रश्न 8. यहाँ माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : इस पाठ में माता-पिता का बच्चों के प्रति वात्सल्य व्यक्त हुआ है।

माता-पिता बच्चों को हर प्रकार का सुख-आराम पहुँचाने का प्रयास करते हैं। माँ बच्चे को दूध पिलाती है तथा खाना ठीक प्रकार से खिलाती है। पिता बच्चे को अपने पास सुलाता है, नहलाता-धुलाता है तथा तैयार करता है। बच्चा पिता के कंधे पर विराजमान रहता है। पिता बच्चे को खूब प्यार करता है–खट्टा-मीठा चुम्मा लेता है। बच्चे उसकी मूँछ उखाड़ते हैं। माँ बच्चे के सिर में तेल लगाती है, चोटी करती है, रंगीन कुरता-टोपी पहनाती है। बच्चे को चोट लगने पर बच्चा माँ की गोद में ही शरण लेता है। माँ ही उसकी चोटों पर हल्दी लगती है।

इन सब क्रियाओं में वात्सल्य भाव की झलक मिलती है।

प्रश्न 9. 'माता का अँचल' शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

उत्तर : 'माता का अँचल' शीर्षक बिल्कुल उपयुक्त है। बच्चे माँ के अँचल में छिपकर सुरक्षित महसूस करते हैं। इस पाठ का बच्चा भी घायलावस्था में माँ के अँचल में दुबक कर राहत महसूस करता है। इस पाठ में माँ की महत्ता का बखान हुआ है अत: यह शीर्षक पाठ की भावना को अभिव्यक्त करने में समर्थ है।

अन्य शीर्षक

'मेरा बचपन'

क्योंकि इस पाठ में लेखक ने अपने बचपन की घटनाओं का वर्णन किया है। अत: यह शीर्षक भी उपयुक्त रहेगा।

Scanned by TapScanner

प्रश्न 10. बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं ?

उत्तर : बच्चे अपने माता-पिता के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति निम्नलिखित रूपों में करते हैं–

– माता-पिता के निकट रहकर।
– माता-पिता की गोद या पीठ पर सवार होकर।
– माता-पिता को अपनी चीजें दिखाकर।
– माता-पिता से खाने की चीजें पाकर।
– माता-पिता की बात मानकर।

प्रश्न 11. इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है, वह आपकी दुनिया से किस प्रकार भिन्न है?

(CBSE S.P. II, 2008)

Scanned by TapScanner

उत्तर : इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह 1930 के आस-पास की है। तब बच्चे साधारण सी चीजों से खेलने का काम चला लेते थे। वे प्रकृति की गोद में रहकर खुश रहते थे।

आज हमारी दुनिया पूरी तरह से भिन्न है। अब हमें ढेर सारी चीजें चाहिएँ। खेल की सामग्री भी बदल गई है। खाने-पीने की चीजों में भी काफी बदलाव आया है। हमारी दुनिया टी.वी., कोल्ड ड्रिंक, पीज़ा, चॉकलेट के इर्द-गिर्द घूमती है।

प्रश्न 12. फणीश्वर नाथ रेणु तथा नागार्जुन की आंचलिक रचनाओं को पढ़िए।

उत्तर : बच्चे पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर उनकी निम्न रचनाएँ पढ़ें–

रेणु की तीसरी कसम

नागार्जुन की बरगद का पेड़, नई पौध।

Scanned by TapScanner